प्रातः क्लास 26/11/68 ओम शांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शांति। बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। जब ओम शांति कहा जाता है तो गोया अपने आत्मा को स्वधर्म का परिचय दिया जाता है। तो ज़रूर बाप भी ऑटोमैटिकली याद आता है; क्योंकि याद तो हरेक मनुष्य भगवान को ही क(र)ते हैं। सिर्फ भगवान का पूरा परिचय नहीं है। आत्मा का भी पूरा परिचय नहीं है। भगवान अपना और आत्मा का ही परिचय देने आते हैं। पतित-पावन कहा ही जाता है भगवान को। पतित से पावन बनाने लिए भगवान भी ड्रामा अनुसार बंधायमान है। उनको भी आना ही है पुरुषोत्तम संगमयुग पर। संगमयुग की समझानी भी देते हैं। पुरानी दुनिया के अंत और नई दुनिया के आदि को ही पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। पुरानी दुनिया और नई दुनिया के बीच में ही बाप आते हैं। पुरानी दुनिया को मृत्युलोक, नई दुनिया को अमरलोक कहा जाता है। यह भी तुम समझते हो मृत्युलोक में आयु कम होती है। अकाले मृत्यु होती रहती है घड़ी-2। वह है ही अमरलोक, जहाँ अकाले मृत्यु होता ही नहीं; क्योंकि पवित्र हैं। अपवित्रता से व्यभिचारी बनते हैं और आयु भी कम होती है। बल भी कम हो जाता है। सतयुग में पवित्र होने कारण अव्यभिचारी हैं, बल भी जास्ती रहता है। बल बिगर राजाई कैसे प्राप्त की? ज़रूर बाप से इन्होंने आशीर्वाद ली होगी। बाप है सर्वशक्तिवान। आशीर्वाद कैसे ली होगी? बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो जिन्होंने जास्ती याद किया होगा उन्होंने ही आशीर्वाद ली होगी। आशीर्वाद कोई मांगने की चीज़ नहीं है। यह तो मेहनत करने की चीज़ है। जितना जास्ती याद करेंगे उतना ही जास्ती आशीर्वाद मिलेगी अर्थात् ऊँच पद मिलेगा। याद ही नहीं करेंगे तो आशीर्वाद भी नहीं मिलेगी। लौकिक बाप कब बच्चों को कहते नहीं कि मुझे याद करो। छोटेपन से आपे ही बाबा-मम्मा कहते रहते हैं। ऑरगंस छोटी है। बड़े बच्चे कब ऐसे बाबा बाबा, मम्मा मम्मा नहीं कहेंगे। उन्हों की बुद्धि में रहता है यह हमारे माँ-बाप हैं, जिससे यह वर्सा मिलना है। कहने वा याद करने की दरकार नहीं रहती। यहाँ तो बाप कहते हैं मुझे और वर्से को याद करो। हद के संबंध को छोड़, अभी बेहद के संबंध को याद करो। मनुष्य चाहते हैं हमारी गति हो। गति कहा जाता है मुक्तिधाम को। सद्गति कहा जाता है फिर से जीवनमुक्ति में आने को। कोई भी पहले आवेगा तो ज़रूर सुख ही भोगेगा। बाप मुख के लिए ही आते हैं। ज़रूर कोई बात डिफीकल्ट है इसलिए इनको ऊँच पढ़ाई कहा जाता है। जितनी ऊँच पढ़ाई उतना डिफीकल्ट भी होगा। सभी तो पास हो न सके। बड़े ते बड़ा इम्तहान थोड़े ही पास करते हैं। बहुत थोड़े स्टूडेंट बड़े इम्तहान पास होते हैं; क्योंकि बड़ा इम्तहान होने से फिर सरकार को वेतन भी बहुत देना पड़े ना। इनसॉलवेंट होने कारण कई स्टूडेंट बड़ा इम्तहान पास कर भी ऐसे ही बैठे रहते। सरकार पास इतना पैसा नहीं है तो(जो) इतना वेतन दे। यहाँ तो बाप कहते हैं जितना ऊँच पढ़ेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। ऐसे भी नहीं सभी राजाएँ वा साहुकार (बनेंगे)। सारा मदार पढ़ाई पर है। भक्ति को पढ़ाई नहीं कहा जाता। यह तो है रूहानी ज्ञान, जो रूहानी बाप पढ़ाते हैं। कितनी ऊँच पढ़ाई है। बच्चों को डिफीकल्ट लगता है; क्योंकि बाप को याद नहीं करते हैं। तो कैरेक्टर्स भी सुधरते नहीं। जो अच्छा याद करते हैं तो कैरेक्टर्स भी सुधरते, अच्छे होते जाते हैं। बहुत मीठे सर्विसएबुल बनते जाते हैं। कैरेक्टर्स अच्छे न है, फिर कोई पसंद भी नहीं आते हैं। जो नापास होते हैं तो ज़रूर कैरेक्टर्स में रोला है। श्री ल॰ना॰ के कैरेक्टर्स बहुत अच्छे हैं। राम की दो कला कैरेक्टर्स कहेंगे। कैरेक्टर्स सुधारने वाले युद्ध के मैदान में लड़ाक होते हैं। तुम माया पर जीत पाने लिए लड़ाक हो ना। राम को यह निशानी दी है, बाप समझाते हैं यह बाप को याद करते, और अपन को दैवी गुणों वाला बनाते-2 फेल हो गया। इसलिए यह निशानी राम को दी है; परंतु यह कोई जानते नहीं हैं। इस निशानी को देख राम की कितने बाणों की लड़ाई रावण साथ दिखाई है। भक्तिमार्ग में ऐसे बातें सुनते नीचे ही गिरते आये हैं। भारत रावण राज्य (के) बाद झूठ खंड हो पड़ता है। सच खंड में तो ज़रा भी झूठ हो न सके। रावण राज्य में सभी झूठ ही झूठ बोलते हैं। झूठे मनुष्य को दैवी गुण वाला कह न सके। यह होलसेल की बात है। रिटेल की

बात नहीं, बेहद की बात है। बाप खुद कहते हैं यह भक्तिमार्ग के शास्त्रों के भूसा इललीगल है। एक बाप ही लीगल है। अर्थात् सच कहने वाला। मनुष्य सभी इललीगल बातें सुनाते हैं। अभी बाप कहते हैं यह इललीगल मनुष्यों की बातें न सुनो, न सुनाओ। एक ईश्वर के मत को ही लीगल मत कहा जाता है। मनुष्य मत को इललीगल मत कहा जाता है। लीगल मत से तुम ऊँच बनते हो अगर बाप के श्रीमत पर चलो तो। सभी नहीं चल सकते हैं। तो इललीगल बन पड़ते हैं। कई बाप के साथ प्रतिज्ञा भी करते हैं बाबा इतनी आयु हमने इललीगल काम किया, अभी नहीं करेंगे। सभी को इललीगल है काम विकार का भूत। देह अभिमान का भूत तो सभी में है ही। मायावी पुरुष में देह अभिमान ही होता है। बाप तो है ही विदेही। विचित्र। तो बच्चे (आत्माएँ) भी विचित्र हैं। यह समझ की बात है। हम आत्माएँ विचित्र हैं। फिर यहाँ चित्र में आते हैं। अभी बाप फिर कहते हैं विचित्र बनो। अपने स्वधर्म में टिको। चित्र के धर्म में न टिको। विचित्रता की धर्म में टिको। देह अभिमान में न आओ। बाप कितना समझाते हैं। इसमें याद की बहुत ज़रूरत है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा (समझ) मुझे याद करो, तो तुम सतोप्रधान प्योर बनेंगे। इम्प्युरिटी में जाने से बहुत दंड मिल जाता है। बाप का बनने (के) बाद अगर कोई भूल होती है, तो फिर गायन है सतगुरु के निदंक ठौर न पाये। अगर तुम मेरी मत पर चल पवित्र न बनेंगे तो सौणा दंड भोगना पड़ेगा। विवेक चलाना है अगर हम याद नहीं कर सकते हैं तो इतना ऊँच पद नहीं पा सकेंगे। पुरुषार्थ के लिए टाइम भी देते हैं। तुमको कहते हैं–क्या साबूत(सबूत) है, जो तुम कहते हो अभी अंत है? बोलो–जिस तन में आते हैं, वह प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य है ना। मनुष्य का नाम शरीर पर पड़ता है। शिवबाबा तो न मनुष्य है, न देवता है। उनको सुप्रीम आ॰ कहा जाता है। वह तो पतित वा पावन नहीं होता। वह समझाते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जावेंगे। बाप ही बैठ समझाते हैं। तुम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हो। फिर सतोप्रधान बनने लिए मुझे याद करो। अभी तो मनुष्यों की बुद्धि जानवरों से भी बदतर हो चुकी है। एक/दो में कहते हैं ना तुम जैसे मकना हाथी हो। तुम तो बंदर हो। साहुकार हो, चाहे गरीब हो, सभी के मुख से यह गालियाँ निकलती हैं; परंतु वह तो हँसी-कुड़ी ही समझते हैं। बाप समझाते हैं लोग प्रायः ऐसे ही ब(न) गये हैं। इन देवताओं की लेयाकत(लायकियत) देखो कैसी है, और इनसे रहम मांगने वालों की भी देखो। वण्डर लगता है, हम क्या थे, फिर 84 जन्मों में कितना गिरकर एकदम चट हो पड़े हैं! बाप कहते हैं मीठे-2 बच्चे तुम दैवी घराणे के थे। अभी अपनी चाल को देखो, यह ब(न) सकते हो। ऐसे नहीं सभी ल॰ना॰ बनेंगे। फिर तो सारा फूलों का बगीचा हो। शिवबाबा को सिर्फ गुलाब का फूल ही चढ़ावे; परंतु नहीं। फूल भी चढ़ाते हैं, अक भी चढ़ाते हैं। बाप के बच्चे कोई फूल भी बनते हैं, अक भी बनते हैं। पास-नापास तो होते ही हैं। खुद भी समझते हैं, यह राजा तो बन न सकेंगे। आप समान ही नहीं बनाते हैं। साहुकार कैसे, कौन बनेंगे, वह तो बाप जाने। आगे चल तुम बच्चे भी बहुत समझ जावेंगे कि फलाना बाप का कैसा मददगार है। कल्प-2 जिन्होंने जो किया है, वही करेंगे। इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। बाप प्वाइंट्स तो देते रहते हैं। ऐसे-2 बाप को याद करना है और ट्रांसटफर भी करना है। भक्तिमार्ग में तुम ईश्वर अर्थ करते हो; परंतु ईश्वर को जानते ही नहीं हो। इतना समझाते हैं वह ऊँच ते ऊँच भगवान है। ऐसे तो नहीं ऊँच ते ऊँच नाम-रूप वाला है। वह है ही निराकार। फिर ऊँच ते ऊँच साकार यहाँ होते हैं। ब्रह्मा वि॰शं॰ को भी देवता कहा जाता। ब्रह्मा देवताय नमः..... फिर कहते हैं शिव परमात्माय नमः। तो बड़ा ठहरा ना। ब्र॰वि॰शं॰ को भी परमात्मा नहीं कहेंगे। मुख से कहते भी हैं शिव परमात्माय नमः। तो ज़रूर परमात्मा एक हुआ ना। देवता को देवतायनमः कहते। मनुष्य लोक में मनुष्य को मनुष्य ही कहेंगे। उनको फिर परमात्मा नमः कैसे कह सकते? एक/दो को परमात्माय नमः थोड़े ही कह सकते। अगर परमात्मा सर्वव्यापी है फिर तो एक/दो को परमात्माय नमः कहें। यह तो पूरा अज्ञान, इनसल्ट है। सभी की बुद्धि में यह डाला गया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। अभी तुम बच्चे समझते हो भगवान तो एक है, उनको ही पतित-पावन कहा जाता है। सभी को पावन बनाना यह भगवान का

ही काम है। जगत का गुरु कोई मनुष्य हो न सके। गुरु पावन होते हैं ना। यहाँ तो सभी पतित विख से पैदा होते हैं। ज्ञान को अमृत कहा जाता। भक्ति को अमृत नहीं कहा जाता है। भक्तिमार्ग में भक्ति ही चलती है। सभी मनुष्य भक्ति में हैं। ज्ञान का सागर, जगद्गुरु एक को कहा जाता है। अभी तुम जानते हो, बाप क्या आकर करते हैं। तत्वों को भी पवित्र बनाते हैं। ड्रामा में उनका पार्ट है। बाप सर्व का सद्गति दाता है। अभी यह समझावें कैसे? आते तो बहुत ही हैं। आगे उद्घाटन करने आते थे तो तारें दी जाती थी। अभी देहली में भी मुरारजी देसाई उद्घाटन कर रहा है, तो उनको समझाने तार दी जावेगी कि होवनहार विनाश के पहले बेहद के बाप को जानकर इससे वर्सा ले लो। यह है रूहानी बाप। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी फादर कहते हैं। क्रियेटर है तो ज़रूर क्रियेशन को वर्सा मिलेगा। बेहद के बाप को कोई भी नहीं जानते। बाप को भूलना, यह भी ड्रामा में नूँध है। बेहद का बाप ऊँच ते ऊँच है, वह कोई हद का वर्सा तो नहीं देंगे ना। लौकिक बाप होते सभी बेहद के बाप को याद करते हैं। सतयुग में उनको कोई याद नहीं करते; क्योंकि बेहद के सुख का वर्सा मिला हुआ है। अभी तुम बाप को याद करते हो। आत्मा ही याद करती है फिर आत्मा ही अपने को और अपने बाप को, ड्रामा को भूल जाती है। माया का परछावा पड़ जाता है। सतोप्रधान बुद्धि को फिर तमोप्रधान ज़रूर होना ही है। स्मृति में आता है नई दुनिया में देवी-देवताएँ सतोप्रधान थे, यह कोई भी नहीं जानते हैं। दुनिया ही सतोप्रधान गोल्डन एज्ड बनती है। उसको कहा जाता है न्यू वर्ल्ड। यह सभी बातें बाप ही बच्चों को समझाते हैं। अभी तुमको मालूम पड़ा है, हम यह थे, फिर ऐसे-2 नीचे आ गये हैं। बाप ही कल्प-2 आकर समझाते हैं। कल्प-2 जो वर्सा तुम लेते हो पुरुषार्थ से, (व)ही मिलने का है। यह भी समझ में आता है, ऐसे होगा। कोई कहते हैं कोशिश बहुत करते हैं; परंतु याद ठहरती नहीं है। इसमें बाप अथवा टीचर क्या करे? कोई पढ़ेंगे नहीं तो टीचर (क्या) करे? टीचर सभी को आशीर्वाद करे तो सभी पास हो जायें! पढ़ाई का फर्क तो बहुत रहता है। यह है बिल्कुल नई पढ़ाई। यहाँ तुम्हारे पास अक्सर करके गरीब, दुखी ही आवेंगे। साहुकार नहीं आवेंगे। दुखी हैं तब आते हैं। साहुकार समझते हैं हम तो स्वर्ग में बैठे हैं। तकदीर में न है। जिनके तकदीर में है उनको झट निश्चय बैठ जाता है। निश्चय और संशय में देरी नहीं लगती है। माया झट भुला देती है। टाइम तो लगेगा ही। इसमें मूँझने की दरकार ही नहीं। अपन ऊपर रहम करना है। श्रीमत तो मिलती रहती है। कितना सहज बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। ईश्वर को सर्वव्यापी कहना यह तो सभी से बड़ा पाप है। भगवान को गाली देते हैं। जज आदि की कोई इज्जत लेते हैं तो उनको फट से दंड दे देते हैं। केस आदि भी नहीं चलाते हैं। भगवान को भी बेइज्जत करते हैं तो दंड मिल जाता है। बड़ा पाप बन जाता है। अभी तुम समझते हो यह तो बड़ी भूल है। बाप को गाली देते हैं ठिक्कर-भित्तर में, कण-कण में भगवान है। बाप की ग्लानि करते-2 कितना नीचे गिर जाते हैं। यह है ही मृत्युलोक। वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होता। क्लास में स्टूडेंट नम्बरवार बैठते हैं ना। यह भी स्कूल है ना। ब्राह्मण से पूछा जाता है तुम्हारे पास नम्बरवार होशियार बच्चे कौन से हैं, जो अच्छा पढ़ते हैं। वह राइट साइड में होनी चाहिए। राइट हैंड का मह(त्व) होता है। पूजा आदि भी राइट हैंड से करते हैं। लेफ्ट हैंड जैसे मेहतर है। फिर भी काम तो आता ही है। सतयुग में भी लेफ्ट हैंड काम में आता है। जैसे दूध अनटच बाँय हैंड निकलता है मशीन से वैसे कुछ मशीन पर हो जाता होगा ना। क्या होता होगा, आगे चल तुमको पता ..... पड़ता जावेगा। अभी समझाया नहीं है। बाकी समझा जाता है वहाँ सफाई बहुत रहती है। बच्चे ख्याल करते रहते हैं सतयुग में क्या होगा। सतयुग याद पड़ेगा तो सत बाबा भी याद पड़ेगा। बाबा हमको सतयुग का मालिक बनाते हैं। वहाँ यह पता नहीं रहता कि हमको यह बादशाही कैसे मिली है। इसलिए बाबा कहते हैं इन ल॰ना॰ में भी ज्ञान नहीं है। बाप हर एक बात अच्छी रीत समझाते रहते हैं। जो कल्प पहले समझे हैं, वह ज़रूर समझेंगे। फिर भी पुरुषार्थ तो करना पड़ता है। बाप आते ही हैं पढ़ाने। यह पढ़ाई है। इसमें बड़ी समझ चाहिए। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।